खोज की वास्तविक यात्रा नए परिदृश्य की तलाश में नहीं, बल्कि नई दृष्टि रखने में निहित है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

यह बात 1660 के दशक के मध्य की है जब महामारी फैलने के कारण ब्रिटेन में स्कूल व कॉलेज व यूनिवर्सिटी समेत अधिकांश गैर-आपातकालिक सार्वजनिक संस्थाओं को बंद कर दिया गया। यह वही दौर था जब ब्रिटेन के कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में ~~न्यूटन~~ नामक पढ़ने वाला न्यूटन नामक युवा अपने परिवार और साथियों से दूर महामारी के रोकथाम हेतु लागू 'पृथक्करण की नीति' के कारण एक छोटे से कमरे और बाग के बगीचे तक विचरण हेतु सीमित हो गया। किंतु वहां दौरान वहाँ जब पेड़ से एक सेब को गिरते देख न्यूटन के मस्तिष्क में एक विचार आया "सेब आखिर नीचे ही क्यों गिरा, ऊपर अथवा बगल में क्यों नहीं??" इसी प्रश्न के उत्तर की तलाश में न्यूटन ने सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की खोज की। और इस रूप में न्यूटन की इस खोज की यात्रा ने नए परिदृश्य के स्थान पर नई दृष्टि का सूत्रपात किया।

अपने इस निबंध में हम खोज से संबंधित ऐसे कई आयामों पर विचार करेंगे।

यथा – खोज से हमारा क्या आशय होना चाहिए? क्या खोज की वास्तविक यात्रा नई दृष्टि की तलाश में ही अथवा खोज की यात्रा का संबंध नए परिदृश्य की तलाश से भी है? खोज की दृष्टि से नए परिदृश्य और नई दृष्टि की तलाश में से अधिक महत्वपूर्ण क्या है? क्या खोज की यात्रा का संबंध किसी अन्य चीज की तलाश से भी हो सकता है? तथा खोज के संबंध में हमारा दृष्टिकोण कैसा होना चाहिए?

सामान्य अर्थों में तो खोज का तात्पर्य किसी नई चीज को प्राप्त करने से होता है किंतु, यदि हम व्यापक दृष्टि से देखे तो खोज की परिधि किसी नई चीज की प्राप्ति से कई अधिक विस्तृत है जिसमें नए दृष्टिकोण, नए विचार, नई तरीके और नए प्रयास आदि भी शामिल होते है। खोज के अर्थ को स्पष्ट करने के क्रम में 'मार्शल रोस्ट' का यह कथन गौरतलब है –

"खोज का अर्थ हमेशा कुछ नया पा लेना नहीं होता, कभी-कभी नए नजरिये से भी देखना होता है।"

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

व्यातव्य है कि लोगों के बीच यह बहुधा विमर्श का विषय होता है कि खोज की वास्तविक यात्रा नए परिदृश्य की तलाश में है अथवा नई दृष्टि की तलाश में है। किंतु इस विषय पर मेरा एक भिन्न दृष्टिकोण है मेरा मानना है कि खोज की वास्तविक यात्रा न तो केवल नए परिदृश्य की तलाश में है और न ही केवल नई दृष्टि की तलाश में अपितु, नई दृष्टि व नए परिदृश्य की तलाश की ~~तलाश~~ एक-दूसरे के पूरक हैं और यूँ कहे कि नए दृष्टि की तलाश यहाँ खोज की यात्रा का पहला चरण है वही नए परिदृश्य की तलाश इसका दूसरा चरण।

इस क्रम में 14 वी -15 वी सदी में यूरोप में हुए 'पुनर्जागरण' नामक सांस्कृतिक आंदोलन तथा 17वी-18 वी सदी में आया 'प्रबोधन' के युग की चर्चा विशेष रूप से प्रासंगिक हो सकती है। वस्तुतः पुनर्जागरण एक प्रकार का जीवन दर्शन था जिसका मुख्य बल ईश्वर के समानांतर मनुष्य के महत्व को स्थापित करने, मनुष्य के व्यक्तिगत पहचान व सम्मान को सुनिश्चित करने तथा

चर्च की रूढ़िवादिता और कट्टरता पर कुठाराघात कर विज्ञान और तर्कवाद को प्रोत्साहित करना और लोगों में साहसिक एवं खोजी दृष्टिकोण को विकसित करने में था जबकि दूसरी तरफ प्रबोधन ने निजता के महत्व, वैज्ञानिक अन्वेषण की प्रासंगिकता तथा स्वतंत्रता की अवधारणा पर अभूतपूर्व रूप में बल दिया।

इस रूप में पुनर्जागरण व प्रबोधन अपने आप में एक नवीन दृष्टि थी जिसका विकास स्वयं को खोजने की प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप हुआ। गौरतलब है कि पुनर्जागरण द्वारा प्रेरित इसी साहसिक एवं खोजी दृष्टि में कुस्तुनतुनिया के पतन 1453 के पश्चात् विद्वानों की पलायन के बाद भी यूरोपीय शासक वर्ग एवं नाविकों को नए मार्गों की खोज हेतु प्रेरित किया। इसका परिणाम कोलंबस द्वारा अमेरिका की खोज और वास्कोडिगामा द्वारा भारत तक पहुँचने के नवीन व आसान मार्ग की तलाश के रूप में देखने को मिला जिसने अंतत: पूरी वैश्विक व्यवस्था को बदल दिया।

पुन: यदी हम चर्चा विज्ञान के क्षेत्र की करे तो हम पाते हैं कि विज्ञान की दुनिया में भी खोज की पहली अभिव्यक्ति नवीन सिद्धांत व नवीन दृष्टि के रूप में होती है और फिर यह एक नई प्रौद्योगिकी का रूप ले लेता है। गौरतलब है कि आरंभ में पूरी दुनिया में सूर्य केन्द्रित ब्रह्मांडीय मॉडल स्वीकृत व समर्थित था किंतु अपनी खोज से पहले कोपरनिकस और फिर गैलीलियो ने सूर्य केन्द्रित ब्रह्माडिय मॉडल का प्रतिपादन कर दुनिया के समक्ष के एक नवीन दृष्किोण प्रस्तुत किया। कालांतर में इसी नवीन दृष्टिकोण में अंतरिक्ष विज्ञान व प्रौद्योगिकी के विकास का मार्ग प्रशस्त हुआ। जो उपग्रहों के माध्यम से ~~अत्यधिक~~ मानव जीवन को अत्यधिक सरल व सहज बना रहा है।

ठीक इसी प्रकार से खोज की एक ~~यात्रा~~ नवीन यात्रा पर 19 वीं सदी एक महान विचारक कार्ल मार्क्स भी चले। उन्होंने एडम स्मिथ के क्लासिकल अर्थशास्त्र के सिद्धांतों का खण्डन कर एक नवीन दृष्टि प्रस्तुत किया।

इस क्रम में उन्होंने न केवल पहली बार इतिहास की भौतिकवादी व्याख्या की अपितु, उन्होंने इस दौर में प्रचलित पूंजीवादी व्यवस्था के शोषणमूलक चरित्र की व्याख्या करते हुए पहली बार 'रक्तपूर्ण क्रांति' के द्वारा इसके समाधान को प्रस्तुत किया। इस क्रम में उनके इस कथन का जिक्र उल्लेखनीय होगा—

"दुनिया के मजदूरों एक हो तुम्हारे पास खोने के लिए कुछ भी नहीं है सिवाय पैरों में बंधी बेड़ियों के, जबकि पाने के लिए सारा जहां है।"

आगे चलकर कार्ल मार्क्स के इन्हीं विचारों को आधार बनाकर लेनिन के नेतृत्व में रूस में बोल्शेविक क्रांति हुई तथा रूस में एक साम्यवादी सरकार अस्तित्व में आई इस साम्यवादी सरकार के द्वारा विशेष रूप से स्टालिन के नेतृत्व में कार्ल मार्क्स के विचारों को मूर्त रूप देने के लिए कई कदम उठाए गए।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

इन अर्थों में यदि देखें तो हम पाते हैं कि खोज की यात्रा पहले नई दृष्टि और फिर नए परिदृश्य की तलाश सुनिश्चित करती है किंतु यह निश्चित रूप से यह सही है कि खोज की यात्रा का प्रभाव नए परिदृश्य की तलाश से कहीं अधिक नई दृष्टि की तलाश पर पड़ता है। आप दुनिया भर में अनगिनत विचार व दृष्टिकोण निरंतर खोजे जा रहे हैं। किंतु उनमें से कुछ ही एक निश्चित भौतिक रूप ले पाते हैं तथापि वहाँ नई दृष्टि की तलाश व्यक्ति को नवाचारी व रचनात्मक बनाती है वहीं नए परिदृश्य की तलाश व्यक्ति को आविष्कारक के रूप में स्थापित कर पाती है।

हाँलाकि ऐसा नहीं है कि खोज का संबंध केवल नई दृष्टि या नए परिदृश्य की तलाश से ही अपितु खोज की यात्रा कई, अन्य प्रभावों / परिणामों को जन्म देती हैं। इन सब में पहला तो यही है कि खोज की यात्रा मनुष्य को मनुष्य बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

दरअसल, डार्विन के विकास क्रम के सिद्धांत से लेकर हर्बर्ट स्पेंसर के 'सर्वोत्तम की उत्तरजीविता' सिद्धांत तक मनुष्य के निरंतर आगे बढ़ने की महत्व

पर प्रकाश डालता है यह सिद्धांत सुनिश्चित करते हैं यदि मनुष्य अपने खोजी दृष्टिकोण की मदद से निरंतर आगे नहीं बढ़ता रहता है- तो एक समय के पश्चात् स्वयं मानव सभ्यता का अस्तित्व ही खतरे में पड़ जाएगा।

स्वयंज्ञ A.P.J. अब्दुल कलाम ने भी यह कहा गया है "जिज्ञासा जन्म देती है खोज को, और खोज जन्म देती है प्रगति को" ऐसे में प्रगति के पथ पर चलते रहने तथा मानव सभ्यता में पूर्णतावाद तथा अंतिम सत्य तक पहुँचने हेतु खोज की यात्रा अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है।

ऐसे में खोज जो जीवन का उद्देश्य नहीं अपितु स्वयं जीवन होना चाहिए अपने आप में मानवता के सार को प्रतिबिंबित करता है खोज की यात्रा के अनुगमन के बिना न तो हम प्रगति कर सकते हैं और न ही दीर्घकाल तक अस्तित्व में बने रह सकते हैं। ~~स्वयं~~ 'युवाल नोवा हरारी' की पुस्तक 'सैपियन्स' के अनुसार स्वयं मानव सभ्यता का विकास एक महान खोज 'संज्ञानात्मक क्रांति' के कारण हुआ हुआ।

अतः यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगा कि खोज की यात्रा न केवल नई दृष्टि व नए परिदृश्य के तलाश को संभव बनाती है अपितु स्वंय मानवता को प्रासांगिक व धारणीय बनाती है। ऐसे में जिस खोजी दृष्टिकोण की अभिव्यक्ति गैलीलियो व न्यूटन के विचारों एवं कार्यों से लेकर भारतीय संविधान के अनुच्छेद 51(A)(h) में वैज्ञानिक दृष्टिकोण के रूप में हुई है के प्रति हमें हमेशा प्रतिबद्ध रहना चाहिए इस क्रम में महान वैज्ञानिक एल्बर्ट आइंसटीन का यह कथन विशेष रूप से उल्लेखनीय होगा -

"मनुष्य की सबसे बड़ी विडंबना तो यह है कि उसके पास तो नई दृष्टि है किंतु उन्हें वह पुरानी चेतना के द्वारा ही हल करने की कोशिश करता है और ऐसा कभी नहीं हो सकता"।

X